



शल्य चिकित्सा से दें वृक्षों को जीवनदान

लोकेन्द्र सिंह*, एस.एस. सिंधु*, एम.सी. सिंह*, प्रीति डागर** और अंकित***

वृक्षों का हमारे जीवन में बहुत ही महत्व है। इनका पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान है। विभिन्न कारणों से वृक्ष भी अपना जीवनचक्र पूरा नहीं कर पाते हैं। इनमें पोषक तत्वों की कमी, कीट एवं रोग आदि प्रमुख कारण हैं। ऐसे में वृक्षों के मुख्य तने में खोखलेपन की समस्या बनी रहती है और वृक्ष समय से पहले ही टूट कर गिर जाते हैं। इस प्राकृतिक आपदा से होने वाले नुकसान से वृक्षों को बचाया जा सकता है। विशेष रूप से वृक्षों के तने में होने वाले खोखलेपन को यदि शल्य चिकित्सा करके ठीक कर दिया जाए, तो उनके जीवन की रक्षा की जा सकती है।

प्रायः देखने में आता है कि बहुत से विशालकाय वृक्षों के तने किसी भी कारण से खोखले हो जाते हैं। समय-समय पर वृक्षों को एक निश्चित आकार, कटाई-छंटाई और शल्य चिकित्सा प्रदान करनी जरूरी है। दीमक और कीटों का तने में रहकर उसको खोखला करना एक मुख्य कारण है। इसके परिणामस्वरूप वृक्ष में जल तथा पोषक तत्वों का जड़ों से वृक्षों के ऊपरी भागों तक पहुंचना असंभव हो जाता है। इसके कारण वृक्ष धीरे-धीरे सूखना आरंभ कर देते हैं और कुछ समय बाद मध्य भाग से टूटकर गिर जाते हैं। इसके अतिरिक्त तेज आंधी-तूफान में स्वस्थ वृक्षों की लंबी और विशाल शाखाएं भी टूटकर गिर जाती हैं, जो वृक्ष को कमजोर तथा वितानहीन बनाती हैं। ऐसे वृक्षों को समय रहते शल्य चिकित्सा देकर उनके क्षतिग्रस्त भाग को पुनः ठीक कर सकते हैं।

क्षतिग्रस्त वृक्षों की शल्य चिकित्सा

वृक्षों की शल्य चिकित्सा करने के

*पुष्प विज्ञान एवं भूदृश्य निर्माण संभाग; **कंप्यूटर अनुप्रयोग संभाग; ***सस्य विज्ञान, भाकृअनुप-भाकृअनुसं, पूसा, नई दिल्ली-110012

लिए प्लास्टर ऑफ पेरिस, मुर्गा-जाली, सीमेंट, कीटनाशी की आवश्यकता होती है।

सर्वप्रथम एक लोहे के सरिये पर कपड़ा लगाकर उसमें आग जलाकर वृक्षों के क्षतिग्रस्त या तने के खोखले भाग को आग से जलाया जाता है। ऐसा इसलिए किया जाता है, ताकि आग से क्षतिग्रस्त भाग में उपस्थित



वृक्ष के मुख्य तने में खोखलापन

वृक्षों के जीर्णोद्धार तथा शल्य चिकित्सा में भिन्नता

वृक्षों का जीर्णोद्धार करने की क्रिया उस अवस्था में की जाती है, जब वृक्ष की शाखाएं अनियमित रूप से बढ़ जाती हैं एवं किसी रोग या कीटों के प्रकोप से ग्रसित हो जाती हैं। इन क्रियाओं में वृक्षों की कटाई-छंटाई शामिल है तथा वृक्षों की कटाई-छंटाई करके उन्हें एक सुदृढ़ आकार दिया जाता है। इसके साथ ही प्रकाश तथा वायु के आवागमन का भी ध्यान रखा जाता है। शल्य चिकित्सा में तने के क्षतिग्रस्त भाग को पुनर्जीवित किया जाता है, ताकि क्षतिग्रस्त भाग के कारण सम्पूर्ण वृक्ष नष्ट न हो जाए।



शल्य चिकित्सा के पश्चात वृक्ष की सुधरी दशा कवकनाशियों तथा कीटनाशियों के अंडों को नष्ट किया जा सके। इसके बाद क्षतिग्रस्त भाग को किसी अच्छे कीटनाशी का छिड़काव करके साफ किया जाता है। इसमें प्लास्टर ऑफ पेरिस को सही प्रकार से भर दिया जाता है। यदि क्षतिग्रस्त भाग का आकार बड़ा है तो प्लास्टर ऑफ पेरिस के ऊपर मुर्गा जाली लगाकर उसके ऊपर सीमेंट का लेप कर दिया जाता है। लेप करने के बाद कुछ महीनों तक इस भाग को खुला ही छोड़ दिया जाता है। चार से पांच माह बाद क्षतिग्रस्त भाग पर नई वानस्पतिक वृद्धि दिखाई पड़ती है और वृक्ष पूरी तरह से स्वस्थ हो जाता है।